## *अमेरिका में हिन्दी शिक्षण का शिलान्यास*

पिछले सात विश्व हिन्दी सम्मेलनों का प्राथमिक उद्देश्य रहा है, हिन्दी को राष्ट्रसंघ की एक आधिकारिक भाषा बनाना। सम्मेलनों के माध्यम से, देश-विदेश के हिन्दी साहित्यकार तथा हिन्दी प्रेमी भारत सरकार से अनुरोध करते रहे हैं कि राष्ट्रसंघ की जनरल असेम्बली में वह हिन्दी को राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने का प्रस्ताव पेश करे। चार वर्ष पूर्व, पहली बार, जून सन् 2003 में सूरीनाम में आयोजित सातवें सम्मेलन में तत्कालीन भारत सरकार ने उनका अनुरोध स्वीकार किया, और आश्वासन दिया कि आगामी सितम्बर में सरकार राष्ट्रसंघ की जनरल असेम्बली में प्रस्ताव पेश करेगी। आगामी चुनाव में सत्तारूढ़ सरकार हार गई, और दूसरी सरकार सत्ता में आई। अब वर्तमान सरकार ने हिन्दी को राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने का मन बनाया है।

हिन्दी को राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के तीन तर्क हैं, वह विश्व के सब से बड़े लोकतंत्र की भाषा है; बोलने वालों की दृष्टि से हिन्दी विश्व की तीन सब से बड़ी भाषाओं में है; हिन्दी, सभी महाद्वीपों में बसे प्रवासी भारतीयों की सांस्कृतिक भाषा है। तीनों बातें तर्कसंगत हैं। राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने के लिए असेम्बली के दो-तिहाई राष्ट्रों का अनुमोदन आवश्यक है। यदि हिन्दी को आवश्यक अनुमोदन प्राप्त हो सका, तो हिन्दी राष्ट्रसंघ की भाषा बन जायगी। इस से दो लाभ होंगे, पहला, भारत को सुरक्षा परिषद का सदस्य बनाने के अभियान में सहायता मिलेगी; दूसरा, हिन्दी को भारत की राजभाषा बनाना सरल हो जायगा। दोनों बातों से हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, जो विश्व में भारत की छवि सुधारने में सहायक होगी।

छवि के दो पहलू हैं, एक आन्तरिक (भारत) तथा दूसरा बाह्य (विदेश)। भारत में मीडिया एवं फ़िल्म उद्योग में, हिन्दी फ़िल्मों तथा हिन्दी के समाचार पत्रों की संख्या में वृद्धि हुई है। राज्य स्तर पर शासन के कामों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। केन्द्रीय सरकार तथा विश्वविद्यालयों में विज्ञान, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी तथा अन्य तकनीकी क्षेत्रों में अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ रहा है। हिन्दी अच्छी कमाई की भाषा नहीं है, परिणामत: अंग्रेज़ी माध्यम की मांग बढ़ती जा रही है, हिन्दी माध्यम निम्न तथा निम्न मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों की विवशता है। *विश्व के विद्वानों का मत है कि मातृभाषा के माध्यम की शिक्षा सर्वसुगम है, भारत ने इस उक्ति को, अपनी आंखें बन्द करके, झुटला दिया है।*

किसी देश की संस्कृति, इतिहास, तथा राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवस्था के अध्ययन के लिए उस देश की भाषा का ज्ञान आवश्यक है। इस विचार के अनुरूप अमरीकी विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषाओं को पढ़ाया जाता है। मुझे विश्व के विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन की अवस्था का ज्ञान नहीं है। मुझे ज्ञात है कि सन् 2002 के आंकड़ों के अनुसार अमेरिका के 51 कालेजों में हिन्दी पढ़ाई जाती थी, जब कि कोरियन 102 कालेजों में, अरबी 250 कालेजों में, चीनी 543 कालेजों तथा जापानी 782 कालेजों में पढ़ाई जाती है। हिन्दी विद्यार्थियों की संख्या 1,430 तथा जापानी विद्यार्थियों की संख्या 52,238 थी। कोरियन भाषा के 27 पीठ तथा हिन्दी का एक भी पीठ नहीं है। एक पीठ की स्थापना के लिए 2-3 मिलियन डालरों की आवश्यकता होती है। विदेशों के अध्ययन पीठ, दाता देशों के सबसे प्रभावी पैरोकार सिद्ध हुए हैं।

राष्ट्रों के विकास में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका है। भाषा, राष्ट्र के समग्र ज्ञान की अदृश्य संरचना है, वह राष्ट्र के ज्ञान का आधार तथा वाहक है, उसे परिपुष्ट बनाना आवश्यक है। देशों के उत्थान-पतन के साथ-साथ भाषाओं का उत्थान-पतन होता है। विजयी देश विजित देशों पर अपनी भाषायें आरोपित करते हैं, मुग़ल शासनकाल में अरबी तथा फ़ारसी, अंग्रेज़ी शासनकाल में इंगलिश, इस आरोपण के प्रमाण हैं। उपरोक्त भाषायें अल्पसंख्यकों की भाषायें थीं। इन भाषाओं में निपुण व्यक्ति स्वार्थसिद्धि ही कर सकते हैं, उन भाषाओं द्वारा, व्यापक पैमाने पर सांस्कृतिक, सामाजिक, तथा बौद्धिक चेतना जाग्रत नहीं की जा सकती, आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिल्प जनता तक नहीं पहुंचाया जा सकता।

सन् 2001 के अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार के विजेता, डा. जोसेफ़ स्टिग्लित्ज़ के अनुसार भारत तथा चीन की अर्थव्यवस्था के बीच इतने बड़े अन्तर का कारण उनकी राजनैतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह बात कि भारत ने शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में आवश्यक पूंजी निवेश नहीं किया। इसके विपरीत, चीनी, देश-विदेश में अपनी भाषा के बारे में सचेत और निष्ठावान हैं। यही कारण है कि चीन में अधिकांशत: विदेशी पूंजी-निवेश चीनी आप्रवासियों ने किया है। प्रसन्नता का विषय है कि चीनी प्रवासियों की भांति, भारत सरकार तथा प्रवासी भी मिलकर यह काम करने लगे है।

*सम्मेलन में प्रतिपाद्य विषयों की सूची में हमें अमेरिका में हिन्दी शिक्षण को विशेष स्थान देना चाहिए। हमें हिन्दी क्षेत्र के उन भारतीय प्रवासियों को आमंत्रित करना है, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में भारत में समुचित पूंजी निवेश किया है, ताकि सम्पन्न और संवेदनशील प्रवासी, भारत सरकार की साझेदारी से हिन्दी-पीठों का निर्माण करें। यदि ऐसा हो सका तो यह आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन की महानतम उपलब्धि होगी।*